महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

मीडिया और मनोविज्ञान का अंतर्संबंध विषय पर परिचर्चा आयोजित

व्यक्ति के पर्सनल स्पेस में बढ़ रहा मीडिया का हस्तक्षेप : प्रो. आनंद प्रकाश

वर्धा दि. 4 फरवरी 2015: इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, विशेषकर टेलीविजन व्यक्ति के मनोविज्ञान को उभारता है। टेलीविजन के प्रभाव में आज लोगों की जरूरतें बढ़ती चली जा रही हैं। यथार्थ तक लोग आज विज्ञापन के माध्यम से पहुंचना चाहते हैं। मीडिया विज्ञापन एवं अन्य माध्यमों द्वारा सामाजिक यथार्थ की मध्यस्थता कर रहा है। उक्त विचार दिल्ली विश्वविद्यालय के मनोविज्ञान विभाग के प्रो. डॉ. आनंद प्रकाश ने संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र एवं मनोविज्ञान विभाग के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित परिचर्चा में व्यक्त किए। प्रो. प्रकाश ने परिचर्चा में मीडिया के मनोविज्ञान पर विस्तृत चर्चा करते हुए कहा कि आज के दौर के मीडिया ने व्यक्ति के मनोविज्ञान में बदलाव लाने का काम किया है।

उन्होंने मनोविज्ञान तथा मीडिया की विशेषता पर तुलनात्मक वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए कहा कि मनोविज्ञान मनुष्य में पूछने की प्रकृति का विकास करता है, जबकि मीडिया इससे इतर बताने पर जोर देता है। एक तरफ जहां मनोविज्ञान हमें पूछने की दिशा में प्रेरित करता है, वहीं दूसरी तरफ मीडिया का दारोमदार बताने पर टिका होता है। आज हम आपस में एक-दूसरे से बातचीत करने और हाल-चाल जानने की अपेक्षा अपने आस-पड़ोस में घटित हो रही घटनाओं की जानकारी हासिल करने के लिए भी मीडिया का सहारा लेने लगे हैं। बल्कि स्थिति और भी गंभीर होती चली जा रही है। आदमी कुछ समय खुद के लिए निकाल पाए, ऐसे समय की कमी पड़ रही है। इसी मानसिकता की वजह से एक व्यक्ति दूसरे से दूर होता चला जा रहा है। साथ ही लोगों की मानसिकता में इस तरह के बदलाव का एक बड़ा कारण मीडिया है। मीडिया ने हमारी सोच, व्यवहार व रिश्तों को बदला है। व्यक्ति के यथार्थ को दिखाने के नजरिये में मीडिया बदलाव ला रहा है। प्रो. प्रकाश के द्वारा शुरू की गई चर्चा को आगे बढ़ाते हुए महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति एवं प्रख्यात

मनोवैज्ञानिक प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने कहा कि मीडिया व्यक्ति को दर्शक बना रहा है। फलस्वरूप व्यक्ति उदासीन होता जा रहा है। इस प्रकार मीडिया हमारे जीवन को सूक्ष्म रूप से प्रभावित कर रहा है।

मीडिया और मनोविज्ञान के अंतर्संबंधों पर अपने वक्तव्य में विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति प्रो. चित्तरंजन मिश्र ने सामाजिक मूल्यों पर ज़ोर देते हुए कहा कि ज़्यादातर मूल्य इससे बनते हैं कि एक सजग व्यक्ति के तौर पर हमें क्या नहीं करना चाहिए, जबकि वर्तमान मीडिया हमें यह बताता है कि क्या करना चाहिए। इसी क्रम में बहुवचन पत्रिका के संपादक अशोक मिश्र ने कहा कि प्रत्येक माध्यम की अपनी एक विशेषता होती है तथा हर माध्यम अपनी विशेषताओं और सीमाओं के अंदर कार्य करता है। वहीं संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र के निदेशक प्रो.(डॉ.) अनिल कुमार राय 'अंकित' ने कहा कि वर्तमान में मीडिया शब्द आते ही सबसे पहले जो छवि मानस पटल पर उभरती है, वह इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की होती है। आज मीडिया के अन्य माध्यमों की स्मृति इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के बाद होती है, जबकि सभी मीडिया के सभी माध्यमों का समाज में अपना विशिष्ट योगदान होता है। आज वैकल्पिक मीडिया भी समाज में अपनी विशिष्ट भूमिका निभा रहा है, लेकिन मीडिया को लेकर होने वाली चर्चाओं में अक्सर लोग वैकल्पिक मीडिया की चर्चा नहीं करते। मंचासीन अतिथियों के साथ ही कार्यक्रम में उपस्थित शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों द्वारा प्रश्नों के माध्यम से भी अन्य कई महत्त्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा की गयी। इस परिचर्चा में विश्वविद्यालय के प्रो. अरविंद कुमार झा, डॉ. कृपाशंकर चौबे, डॉ. अख़्तर आलम, डॉ. राकेश मिश्र, अनामी शरण बबल सहित विभिन्न विषयों के शोधार्थी व विद्यार्थी शामिल हुए।